कविता, नाटक, कहानी लेखन

प्रश्न 1) कविता क्या है?

उत्तर : कविता हमारी संवेदनाओं के निकट होती है। ये हमारे मन को छू लेती है, कभी-कभी झकझोर देती है।

प्रश्न 2) कविता के मूल में क्या है?

उत्तर : कविता के मूल में संवेदना है, राग है, संपूर्ण सृष्टि से जुड़ने और उसे अपना बना लेने का बोध है।

प्रश्न 3) कविता कैसे लिखी जाती है?

उत्तर : कविता लेखन के विषय में दो मत हैं। एक मत है कि कविता रचने की कोई प्रणाली सिखाई या बताई नहीं जा सकती। दूसरे मत के मानने वाले मानते हैं कि कविता लेखन एक कला है। जैसे चित्र कला, नृत्य कला, संगीत कला सिखाई जा सकती है, वैसे ही कविता लेखन को भी सिखाया जा सकता है।

प्रश्न 4) कविता में शब्दों का क्या महत्व है?

उत्तर : शब्दों से मेलजोल कविता की पहली शर्त है। अंग्रेज़ी कवि डब्ल्यू. एच. आर्डेन ने कहा है –"प्ले विद द वर्ड्स", अर्थात् शब्दों से खेलना सीखें। शब्दों से खेलना, उससे मेलजोल बढ़ने से शब्दों के भीतर सदियों से छिपे अर्थ की परतें खुलने लगती है। शब्दों से जुड़कर कविता की दुनिया में प्रवेश कर सकते हैं। शब्दों से खेलते हुए धीरे-धीरे एक ऐसी दुनिया में पहुँच जाते हैं, जहाँ रिद्म है, लय है और एक व्यवस्था है। यही प्रवृत्ति आगे चलकर शब्दों को ठीक-ठाक रखकर अर्थ के साथ खेलना सिखा देती है।

VASUNDHARAHINDI.COM

प्रश्न 5) बिंब और छंद से आप क्या समझते हैं?

उत्तर : दुनिया को जानने का साधन इंद्रियाँ है। बाह्य संवेदनाएँ मन में बिंब के रूप में बदल जाती हैं और जब हम कुछ विशेष शब्दों को सुनते हैं, तब मन में कुछ चित्र कौंध जाते हैं। स्मृति चित्र ही शब्दों के सहारे कविता के बिंब के रूप में प्रकट होते हैं। बिंबों का संबंध मन से होता है। कविता लिखते समय पहले दृश्य और श्रव्य बिंबों पर ध्यान देना चाहिए, क्योंकि ये बिंब सबको प्रभावित करते हैं।

छंद अनुशासन की जानकारी से होकर गुजरना एक कवि के लिए आवश्यक है। तभी आंतरिक लय का निर्वाह संभव है। कविता छंद और छंद मुक्त दोनों होती हैं। छंदबद्ध कविता के लिए छंद का बुनियादी ज्ञान जरूरी है। छंद मुक्त कविता लिखने के लिए भी छंद ज्ञान आवश्यक है।

प्रश्न 6) कविता के मुख्य घटक कौन कौन से हैं?

उत्तर : कविता के घटक निम्नलिखित हैं –

- कवि को भाषा का सम्यक् ज्ञान होना चाहिये।
- शब्द विन्यास, वाक्य विन्यास का उचित ज्ञान जरूरी, विभिन्न संकेतों, चिह्नों का तथा काव्य की शैली का उचित ज्ञान जरूरी।
- कवि को छंद का उचित ज्ञान जरूरी, कवि कविता चाहे छंद बद्ध लिखे या छंद मुक्त लिखे।
- किसी समय विशेष की प्रचलित प्रवृत्ति की ठीक-ठीक जानकारी कवि को होनी चाहिए, क्योंकि कविता समय विशेष की उपज होती है।
- कम से कम शब्दों में अपनी बात कह देना और कभी-कभी शब्दों या दो वाक्यों के बीच कुछ अनकही छोड़ देना कवि की ताकत बन जाती है।

प्रश्न 7) क्या नाटक साहित्य विधा है?

उत्तर : कविता, कहानी, उपन्यास की तरह ही नाटक भी साहित्य की एक विधा है। फिर भी नाटक अपनी कुछ निजी विशेषताओं के कारण साहित्य की अन्य विधाओं से अलग हो जाता है।

VASUNDHARAHINDI.COM

प्रश्न 8) नाटक साहित्य की अन्य विधाओं से अलग कैसे हैं?

उत्तर : नाटक को भारतीय परंपरा में दृश्य काव्य कहा गया है। साहित्य की अन्य विधाएँ लिखित रूप में एक निश्चित और अंतिम रूप को प्राप्त कर लेती हैं, जबकि नाटक अपने लिखित रूप में एक आयामी ही होता है। नाटक के मंचन के बाद ही उसमें पूर्णता आती है। साहित्य की दूसरी विधाएँ पढ़ने या सुनने तक की यात्रा करती हैं, जबकि नाटक पढ़ने, सुनने और देखने के तत्व को अपने में समेटे रहता है।

प्रश्न 9) नाटक के लिए समय बंधन क्यों जरूरी है?

उत्तर : - नाटक एक निश्चित समय सीमा में पूरा होना चाहिए।

- नाटक एक ऐसी विधा है जो हमेशा वर्तमान काल में ही घटित होती है। नाटक की कहानी चाहे भूतकाल या भविष्य काल से संबंधित हो, परंतु उसे वर्तमान काल में ही घटित होना पड़ता है।

- कहानी, उपन्यास, कविता को हम कभी भी पढ़-सुन सकते हैं, एक बार रोक कर फिर शुरू कर सकते हैं, परंतु नाटक के साथ ऐसा संभव नहीं है।

प्रश्न 10) नाटक के लिए शब्द का क्या महत्व है?

उत्तर : नाट्यशास्त्र में बोले जाने वाले शब्द को नाटक का शरीर कहा गया है। नाटककार के लिए आवश्यक है कि वह अधिक से अधिक संक्षिप्त और सांकेतिक भाषा का प्रयोग करे, जो अपने आप में वर्णित न होकर क्रियात्मक अधिक हो, शब्दों में दृश्य बनाने की क्षमता हो, नाटककार अपने शाब्दिक अर्थ से ज्यादा व्यंजना की ओर ले जाए। अच्छा नाटक वह है जो लिखे या बोले गए शब्दों से अधिक ध्वनित करे, जो लिखा या बोला नहीं जा रहा। नाटक का एक मौन, अंधकार या ध्वनि-प्रभाव कहानी या उपन्यास के बीस-पच्चीस पृष्ठों के बराबर होता है।

प्रश्न 11) नाटक के लिए कथ्य क्यों जरूरी है?

उत्तर : नाटककार नाटक के कथ्य को किसी शिल्प या संरचना में पिरोता है। इसके बाद कथ्य को मंचन योग्य बनाया जाता है। कथ्य को नाटक के रूप में संपादित करने के लिए घटनाओं, स्थितियों, दृश्यों का चुनाव कर उन्हें इस तरह क्रम में रखा जाता है कि वे शून्य से शिखर की तरफ विकास की दिशा में आगे बढ़े।

प्रश्न 12) नाटक का सबसे सशक्त माध्यम संवाद क्यों है?

उत्तर : नाटक का सबसे सशक्त माध्यम संवाद है, क्योंकि संवाद के बिना नाटक का काम नहीं चलता। नाटक के लिए तनाव, उत्सुकता, रहस्य, रोमांच और अंत में उपसंहार जैसे तत्व अनिवार्य हैं। इसके लिए आपस में विरोधी विचारधाराओं का संवाद जरूरी है। इसलिए नाटक का सबसे सशक्त माध्यम संवाद है।

प्रश्न 13) वह कौन सी चीज है जो सशक्त नाटक को कमजोर नाटक से अलग करती है?

उत्तर : संवादों के पीछे निहित अनलिखे एवं अनकहे संवादों की ओर जाना, जिन्हें अंग्रेजी भाषा में सब-टेक्स्ट कहा गया है। जिस नाटक में इस तत्व की जितनी अधिक संभावनाएँ होंगी, वह नाटक उतना ही सशक्त होगा।

प्रश्न 14) मौखिक कहानी वाचन प्राचीन काल में क्यों लोकप्रिय था?

उत्तर: मौखिक कहानी में वाचक आवश्यकतानुसार अपनी कल्पना के माध्यम से नायक के गुणों का विकास करता था। संचार का कोई और माध्यम नहीं था। इस कारण धर्म प्रचारक अपने सिद्धांतों और विचारों को लोगों तक पहुँचाने के लिए कहानी का सहारा लिया करते थे। शिक्षा देने के लिए भी कहानी विधा का प्रयोग किया जाता था। राजस्थान में यह विशेष रूप से लोकप्रिय थी।

प्रश्न 15) कहानी का कथानक क्या होता है?

उत्तर : कहानी के केंद्रीय बिंदु को कथानक कहते हैं। कथानक में संक्षिप्त रूप से आरंभ से अंत तक कहानी की सभी घटनाओं और पात्रों का उल्लेख किया जाता है। कथानक कहानी का प्रारंभिक नशा होता है। कथाकार किसी घटना, जानकारी, अनुभव या कल्पना के आधार पर कथानक तैयार करता है, जिसमें कल्पना प्रधान होती है। कथानक का प्रारंभ, मध्य और अंत होता है। इसमें द्वंद्व के तत्व भी होते हैं, अर्थात् अनेक बाधाओं को पार करते हुए कथानक किसी निष्कर्ष पर पहुँचता है।

प्रश्न 16) कहानी को प्रामाणित और रोचक बनाने के लिए क्या आवश्यक है?

उत्तर : कहानी को प्रामाणित और रोचक बनाने के लिए देश, काल, वातावरण तथा स्थान का ध्यान रखना आवश्यक है।

प्रश्न 17) कहानी में पात्रों की क्या भूमिका है?

उत्तर : कहानीकार और पात्रों में निकट संबंध होना चाहिए, क्योंकि प्रत्येक पात्र का अपना स्वरूप, स्वभाव और उद्देश्य होता है। पात्रों के द्वारा ही कहानी का विकास होता है। पात्रों का स्वरूप जितना स्पष्ट होगा, उतनी अच्छी तरह पात्रों का चरित्र चित्रण होगा और संवाद लिखे जाएँगे। इसलिए कहानी में पात्रों की महत्वपूर्ण भूमिका है।

प्रश्न 18) कहानी में पात्रों का चरित्र-चित्रण किस-किस तरह कर सकते हैं?

उत्तर : कहानी में पात्रों का चरित्र-चित्रण करने के अनेक तरीके हैं :-

- पात्रों के चरित्र का वर्णन कहानीकार स्वयं करे।
- पात्रों का चरित्र-चित्रण उनके क्रिया-कलापों, संवादों तथा दूसरे लोगों द्वारा बोले गए संवादों के माध्यम से भी किया जाता है।
- समाज में अलग-अलग प्रकार के लोग होते हैं। उनके अलग-अलग स्वभाव व अभिरुचियाँ होती हैं। चरित्र-चित्रण पात्रों की रूचि और स्वभाव से भी किया जा सकता है।

प्रश्न 19) कहानी में संवाद क्यों महत्त्वपूर्ण होते हैं?

उत्तर : कहानी में संवाद के बिना पात्रों की कल्पना नहीं की जा सकती है। संवाद ही कहानी को, पात्रों को स्थापित व विकसित करते हैं, कहानी को गति देते हैं व आगे बढ़ाते हैं। जो घटनाएँ और प्रतिक्रियाएँ कहानीकार होते हुए दिखा नहीं सकता, उन्हें संवादों के माध्यम से अभिव्यक्त किया जाता है।

प्रश्न 20) संवाद लिखते समय कहानीकार को किन बातों का ध्यान रखना चाहिए?

उत्तर : संवाद पात्रों के स्वभाव और पूरी पृष्ठभूमि के अनुकूल होने चाहिए। संवाद पात्रों के विश्वासों, आदर्शों तथा स्थितियों के अनुकूल होने चाहिए। संवाद इस प्रकार होने चाहिए कि कथाकार गायब हो जाए और संवाद के पात्र बोलते लगे। संवाद छोटे-छोटे, स्वाभाविक और उद्देश्य को लक्षित करने वाले होने चाहिए। अनावश्यक संवादों का विस्तार कई जटिलताएँ उत्पन्न करता है, इससे बचना चाहिए।

VASUNDHARAHINDI.COM

प्रश्न 21) कहानी का चरम उत्कर्ष / क्लाइमैक्स का चित्रण ध्यान पूर्वक क्यों करना चाहिए?

उत्तर : भावों या पात्रों की अतिरिक्त अभिव्यक्ति चरम उत्कर्ष के प्रभाव को कम कर सकते हैं। कहानीकार का प्रतिबद्धता या उद्देश्य की पूर्ति के प्रति अतिरिक्त आग्रह कहानी को भाषण में बदल सकता है। इसलिए अच्छा यह होगा कि चरम उत्कर्ष पाठक स्वयं सोचें, जिससे पाठकों को लगे कि उन्हें स्वतंत्रता दी गई है। उन्होंने जो निर्णय निकाले हैं, वे उनके अपने हैं।

प्रश्न 22) कहानी में द्वंद्व क्यों महत्वपूर्ण है?

उत्तर : द्वंद्व कहानी के कथानक को आगे बढ़ाता है। दो विरोधी तत्वों का टकराव या बाधाएँ, अंतर्द्वंद जितना स्पष्ट होगा, कहानी उतनी ही सफलता से आगे बढ़ेगी।

प्रश्न 23) कहानी लिखना सीखने का सबसे अच्छा व सीधा रास्ता क्या है?

उत्तर : अच्छी कहानियाँ पढ़ी जाएँ और उनका विश्लेषण किया जाए, कहानी लेखन सीखने का यह सबसे अधिक कारगर माध्यम होगा।

*****

VASUNDHARAHINDI.COM